अध्याय - ३

तेंदुआ का परिचय और प्रतीकात्मकता

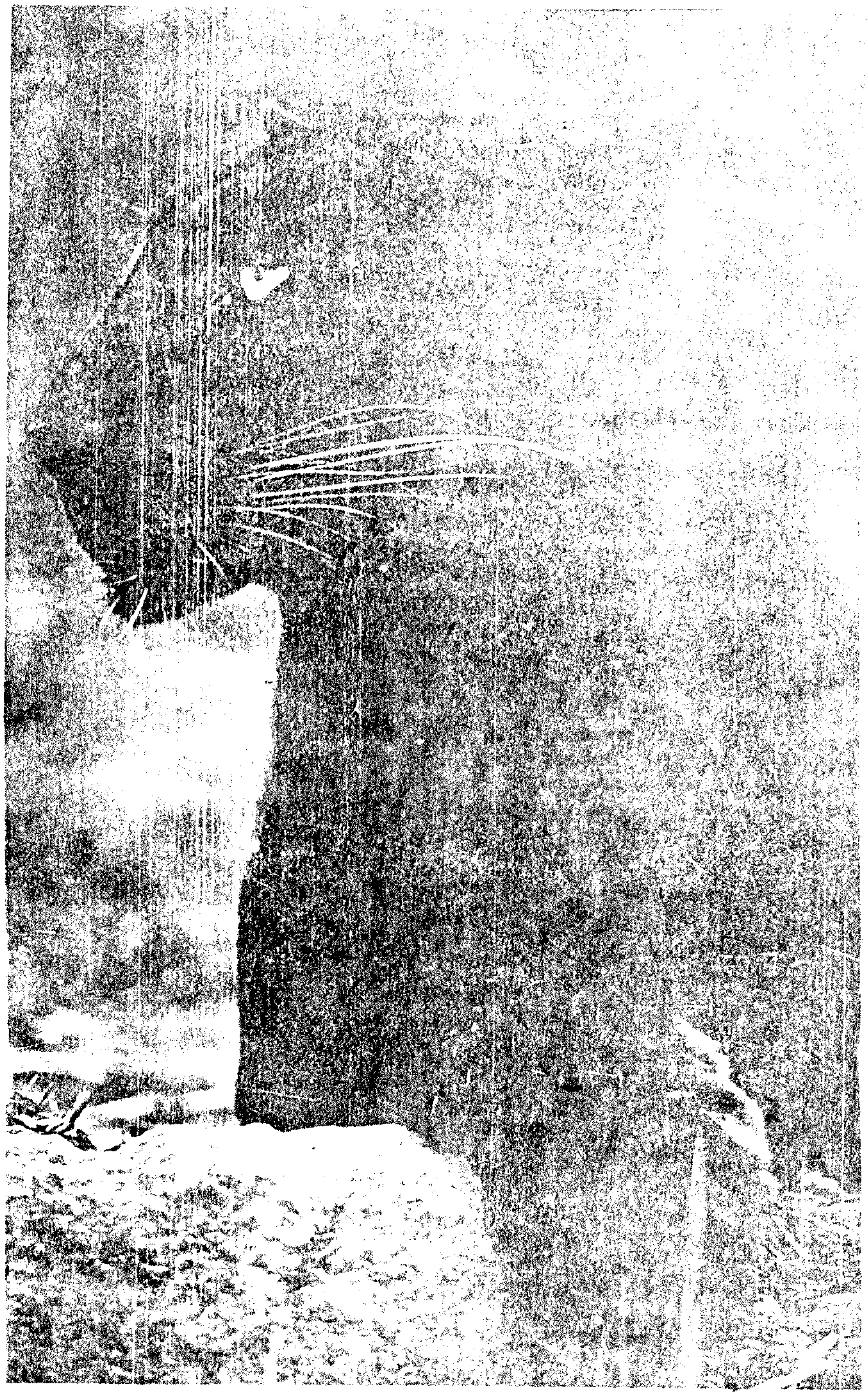

प्रकरण – 3

तेंदुआ का परिचय और प्रतीकात्मकता

मुद्राराक्षस का नाटक "तेंदुआ" परम्परित नाट्यात्मक ढाँचे से अलग एक नया प्रयोगात्मक विचारोत्तेजक नाटक है। इसकी पटकथा एक ठोस समसामायिक विषयवस्तु पर आधारित प्रतीकों एवं अभिनय शिल्प प्रयोगों के माध्यम से इस प्रकार तैयार की गई है कि पाठकों और दर्शकों की दिलचस्पी समान रूपेण आद्योपान्त बनी रह संके।

मुद्राराक्षसजी का "तेंदुआ" नाटक पशु प्रतीक है। यह उनका प्रयोग अभिनव प्रयोग है। मुद्राराक्षसजी ने पूरे नाटक में विकृति, कुण्ठा, घृणा, भय को चित्रित किया है। प्रस्तुत नाटक मनुष्य में छिपी पाशविकता को उजागर करता है। समाज के प्रत्येक क्षेत्र में हो रहे मूल्यविघटन पर भी प्रकाश डालता है। प्रस्तुत नाटक में मानव जीवन की हो रही असंगतियों का चित्रण हुआ है। आर्थिक विपन्नता से विवश हुआ मानव और नैतिकता के पुराने मूल्यों को तोडकर दिशाभ्रष्ट हुआ, उसका जीवन नाटकों में उभरता है। साथ ही साथ नपुंसकता पर प्रकाश डाला हुआ नजर आता है। नपुंसकता के कारण मनुष्य अपने जीवन में सुख नहीं प्राप्त कर सकता और न दूसरों को मानसिक आनंद दे पाता है। प्रस्तुत नाटक में भूषणराय और मदान नपुंसत्वहीन पुरूष है। "तेंदुआ" नाटक की रेनु राय तथा मिसेस मदान के चरित्रों में पुरूषभाव की प्रतिमा दिखाई देती है। प्रस्तुत नाटक के पात्र लैंगिक विकृतियों से ग्रस्त हैं, तो दूसरों को दुःख देने में उन्हें आनंद मिलता है। प्रस्तुत नाटक के द्वारा, राजनीतिक नेता, पुलिस व्यवस्था पर भी करारा व्यंग्य कसा है। तेंदुआ में आर्थिक विपन्नता, परवशता और यांत्रिकता के कारण आज व्यक्ति दिशाहीन हुआ है, जो बाहर से तो वह ठीक लगता है, किन्तु अंदर से टूटा–फूटा नजर आता है। मुद्राराक्षसजी ने खुद इसे प्रतीकात्मक नाटक मानते हुए कहा है – "वैसे एक अर्थ में यह नाटक प्रतीकात्मक है।

अपने ही घर में वे एक मुर्दे की तरह जीवन बिताते हैं। क्योंकि आज सामाजिक मूल्य घटते जा रहे हैं। भूषणराय अपनी पत्नी चाहती है, वैसा ही व्यवहार करता है, जो एक मुजरीम के रूप में पकडे माली को लॉकअप में बंद करने के बजाय वह अपने पत्नी को सौंप देता है। आज स्त्री को इतना स्वातंत्र्य मिल रहा है कि वह सामाजिक मूल्यों की ओर ध्यान नहीं देती है। और न हीं किसी नियमों का पालन करती है। और न ही अपने पति का सम्मान करती है, बल्कि किन्ही एक नौकर की तरह उसके साथ व्यवहार करती है।

प्रस्तुत नाटक की दो स्त्रियाँ जब अपने पति से संतुष्ट नहीं होती तो वह अपने आनंद के लिए, कामवासना की तृप्ति के लिए वे अन्य उपायों को खोजती नजर आती है।[3] और वह तेंदुअे के समान हिंसक तरीके से पुरूष की हत्या करती है। इस नाटक में संत्रास, नैराश्य, कुण्ठा, विवशता देखने को मिलती है।

आज आधुनिक युग में मनुष्य मनुष्य के साथ पशु की तरह व्यवहार करता हुआ नजर आता है। रेनु माली को अलग-अलग तरह की यातनायें देती है और उस से आनंद भी प्राप्त करती हैं। वह अर्ध नग्न माली पर कभी वह मोमबत्ती जलाकर उसकी रान की खाल पर चिपकाकर जलाती है, जो कभी फ्रीज का पानी डालकर उसे ठंडा किया जाता है, तो कभी-कभी उसकी पीठ पर नाखुन से खुरच देती है, तो कभी उसके कानों में मायक्रोफोन लगाती है। इसीसे माली जब तडपता तो उन्हें आनंद मिलता है। क्योंकि वह अच्छे आदमी के बदले वह एक गंदे आदमी को अपनाना चाहती है। रेनु का मत है कि अत्याधिक उत्कट वेदना के क्षणों में काम की उत्तेजना उभर आती है। इसलिए वह माली को यातनाएँ देती है। उसके चिल्लाने में उन्हें संगीत का सुख मिलता है। रेनु और मिसेस के संवाद : –

रेनु : भागता कैसे ? मैंने उसे सोफे से जकडकर बाँध दिया था। फिर मैंने क्या किया जानती हो, मोमबत्ती का एक छोटा सा टुकडा लिया और उसे उसकी रान पर चिपकाकर जला दिया..... यहाँ (जाँघ पर काफी ऊपर संकेत) मोमबत्ती जले तो पेट पर भी जलन होगी ना।

कुछ अनिवार्य प्रतीक इस नाटक में आ गए हैं जैसे तेंदुआ। मिसेस मदान माली पर यातना के प्रयोग करती है तो माली की आँखों में एक अनायास हिंसा उभरती है। मिसेस मदान पशु को नियंत्रण में रखती है। मिसेस रेनु रायको पशु का समान्तर मिलता है एक संघर्षशीलका माली। संघर्षशील माली की वह मौन प्रतिहिंसा एक जगह उन औरतों को भयभीत करने की बजाय उत्तेजित और मुग्ध करती है।"

उच्च वर्ग निम्न वर्ग के बीच का फासला क्या होता है यह दर्शाने का काम मुद्राराक्षसजी ने इस नाटक के द्वारा ——————किया है। पूँजीपति वर्ग मनुष्य का अनेक प्रकार से शोषण करता है। आज मनुष्य मनुष्य नहीं बल्कि पशु बन गया है। प्रस्तुत नाटक में भूषण राय, रेनू राय, मिसेस मदान है। भूषणराय कमिशनर है, मिसेस मदान का पति इन्कमटैक्स कमिशनर है। इस नाटक में उच्च वर्ग और निम्न वर्ग की तुलना नजर आती है। क्योंकि आज उच्च वर्ग निम्न वर्ग का शोषण कर रहा है। और इसी कारण निम्न वर्ग दबा जा रहा है। वह उच्च वर्ग के खिलाफ आवाज नहीं उठाता। अगर आवाज उठायी जाती है तो उनका मुँह बंद कर दिया जाता है। यहाँ उच्च वर्ग अमीर बनता जा रहा है निम्न निम्न ही बनता जा रहा है। आज उच्च वर्ग की सुविधाओं के लिए ही निम्न वर्ग जीता है। वे केवल यातनाओं को सहते है, अंदर ही अंदर घुटते है और अपना दुःखी जीवन बिताते हैं। प्रस्तुत नाटक में मुद्राराक्षसजी ने यथार्थ और पशु प्रतीकों का इस्तेमाल किया है। मिसेज मदान और रेनु राय ये दोनों महिलाएँ उच्च वर्ग की हैं।

रेनु रय :- भूषणराय की पत्नी है। जो काम तृप्त नहीं होती। यही अतृप्ति विक्षिप्तसी बना देती है। मदान भी - मौन विकृति से विक्षिप्त बनी औरत है। दोनों स्त्रियाँ कामवासना से ग्रस्त हैं। दोनों महिलाएँ उच्च वर्ग की हैं।[2] जो माली को टार्चर करती हैं। इनके पति नपुंसक हैं। जिनसे उन्हें यौन तुष्टि नहीं हो पाती। भारतीय संस्कृति के अनुसार पति अपनी पत्नी के साथ, प्रेमपूर्ण व्यवहार करता है, किंतु वह पत्नी के काबू में नहीं आता है, बल्कि आज पत्नी के हाथ में पति आ गया है। वह जैसा चाहती है वैसा ही होता है। पति अपनी इच्छा के अनुसार जीवन बिता नहीं सकता। आज लोग दूसरों पर अपना अधिकार जताते हैं। किन्तु

मिसेस मदान : इन हरामियों के पेट पर क्या जलन होगी। सालों का पेट एक्लेमेटाइज्ड हो जाता है. खैर फिर ।

रेनु : मोमबत्ती जलती रही । जलते – जलते समाप्त हुई तो पिघला हुआ मोम सारी जाँघ पर फैला गया और उसकी बत्ती उसकी खाल के साथ चिपककर जलने लगी। देन आई सा ..... एकजेक्टली दि सेम ही वाज सेक्ससुअली एक्साइटेड।

मिसेज मदान : रियली ? यू सा साईट ? माई ..... ही वाज ..... एक्साइटेड ... फिर क्या किया ? इज ही स्टिल इन द सेम कण्डीशन ...।

रेनु : अह.... उसके बाद मैंने फ्रिज का एक बोतल पानी डाला तब कहीं वह ठंडा हुआ।

मिसेज मदान : हिश ठंडा क्यों कर दिया ... यू डोंट नो .... इस तरह एक्साइट होने के बाद आदमी की पोटेन्सी बढ जाती है। यू नो आई रिमेंबर एक बुक।[4]

इसी प्रकार दोनो महिलाएँ पशु तेंदुअे के समान हिंस्त्र बनी नजर आती है। मिसेज मदान माली को यातनाएँ देती है तो माली की आँखों में एक अनायास हिंसा उभारती है। यहाँ माली को टार्चर करने के लिए वह क्रूर से क्रूर तरीके ढूँढ निकलती है। ह्यू-मन टार्च के रूप में माली को जलाने तरीका ऐसा ही है जो पशुता को भी दो कदम पीछे छोड देता है। हम जो उन पशु को पशु कहते फिर भी हमारे और पशु में बहुत अंतर है। हमारे मन में जो प्रेम नहीं वह प्रेम पशु में पाया जाता है। वे इतने हिंसक नहीं होते, क्रिंतु मिसेस रेनु और मिसेस मदान का यह रूप देखकर ऐसा लगता है कि पशु भी किसी के साथ इतनी बेरहमी और पाशविकता से पेश नहीं आते।[5]

भूषणराय और रेनु राय के निम्न संवाद भी पशुता के ही द्योतक है –

भूषण राय : ऐसे यह कुछ बताएगा भी नहीं। थर्ड डिग्री मैथड के बगैर ये जानवर कभी रास्ते पर नहीं आते ।

रेनु रॉय : थर्ड डिग्री ? वेरी गुड । तो करो न डियर, आई शैल वॉच । मैंने कभी किसी आदमी को टार्चर किये जाते नहीं देखा है। व्हाट ए थ्रिल। डियर करोगे न?[6]

मुद्राराक्षस का कथन है कि दूसरे पात्र विशिष्टता चाहनेवालों जँचेंगे नहीं। उसमें द्वंद्व की स्थिति नहीं है। आपका कथन है –"औद्योगिक क्रांति ने परिवर्तन किया। सामंत और श्रेष्ठ के अलावा भी एक वर्ग पैदा हुआ मध्यम वर्ग। शोषण व्यवस्था का बिचौलिया।"[7] पहले नाटक में रंगमंच होता है, अनेक सुविधाओं का उपयोग कर अनेक नाटक प्रस्तुत किये जाते हैं। किन्तु मुद्राराक्षस के नाटकों में रंगमंच की कोई आवश्यकता नहीं है। परम्परागत नाटक में पात्र तो है लेकिन इसमें किसी प्रकार की लड़ाई नजर नहीं आती। इसमें केवल सामान्य लोगों को केंद्र में रखकर नाटक लिखा हुआ है। सामान्य जनता की समस्या पर प्रकाश डाला गया है।"तेंदुआ उन्हें जँचेगा नहीं जो चरित्रों की विशिष्टिताओं और बारीकियों को देखना चाहते है या किसी नाटक में मानवीय संवेदनाओं की जटिलता पहचानना चाहते हैं। उन्हें यह नाटक अत्यंत सरलीकृत लगेगा । भ्रान्ति मंच की नजर से भी थी और क्लासिकी मंच की दृष्टि से भी घटनाओं के उतार चढाव और चरित्रों के पारस्पारिक द्वन्द्व की कोई भी स्थिति इस नाटक में नही।"[8]

डॉ.तुकाराम पाटील के अनुसार कामुकता का अतिरेक मानव के व्यक्तित्व ओर जीवन में विकृति लाता है। मिसेज मदान की कामुकता का अतिरेक उसके स्त्री स्वभाव के शील और शालीनता से विसंगत है।[9]

स्त्री पुरूष सम्बन्ध कहीं पर मधुर है, तो कहीं पर कठोर भी। स्त्री घर से बाहर निकलने के बाद कभी–कभी अपनी मर्यादाओं की सीमा लाँघ जाती है, और उसकी सुख उपभोग की इच्छा भी तीव्र होती जाती है। जिसका आनन्द लेने के लिए वह कुछ भी करने को तैयार रहती है। मिसेज मदान और मिसेज रेनु इसीके द्योतक है। उच्च वर्ग अपने इच्छानुसार अपना आनंद लुटते हैं। इसमें वे किसी की फिक्र नहीं करते और न ही किसी के बारे में सोचते हैं।

ज़ैसा कि, जिस प्रकार राजा दशरथ के बेटे राम की छठी के समय हीरन को मारकर मेहमानों को उसके माँस की दावत दी जाती है और हीर . की खाल से राम को खेलने के लिए डिमडी बनाई जाती है। उधर हिरनी (माली की पत्नी) ढाक के पेड के नीचे खडी होकर हीर को याद करके रोती है। रेनु और मिसेस मदान के आनंद में माली के प्राण जाते है और उसकी स्त्री बंगले के बाहर विलाप करती है। यहाँ यह स्पष्ट हो जाता है कि उच्च वर्ग केवल अपने आनंद के लिए निम्न वर्ग का इस्तेमाल करता है। वह केवन आनंद पाना चाहता है। अपनी मनमानी करके जीवन व्यतीत करता है। वह दूसरों के बारे में सोचता नहीं। गरीबों पर अन्याय करता हुआ नजर आता है। गरीब लोगों की बलि देकर वह बहुत कुछ प्राप्त करना चाहता है। उच्च वर्ग के लोग गरीब लोगों की हालत एक कुत्ते जैसे बनाते है। इसी प्रकार उच्च वर्ग के सुविधाभोगी लोग निम्न वर्ग के लोगों के साथ क्रूरता और पाशविकता से पेश आते हैं।

लैंगिक इच्छा मनुष्य की मूलभूत प्रवृत्ति होती है, जिसकी पूर्ति मनुष्य अपने भिन्न लिंगी व्यक्ति से करता है। किन्तु समाज में ऐसे लोग होते है जिन्हेंअपना लैंगिक जीवन अच्छी तरह से बिताने में कठिनाईयाँ होती है।नपुंसक मनुष्य में काम करने की इच्छा प्रबल होती है, किन्तु समागम करने की क्षमता उसमें नहीं होती। इसी कारण पुरूष दु:खी बनता है। इसका परिणाम अपने परिवारों पर दिखाई देता है। जो सुख पत्नी को देना चाहिए वह सुख अगर पुरूष नहीं दे पाता तो वह पत्नी अन्य पुरूषों से संबंध रखती है। पुलिस कमिशनर और इन्कमटेक्स कमिशनर मदान में यही प्रवृत्ति दिखाई देती है। ये दोनों पुरूष नपुंसक है, इसी कारण उनकी पत्नियाँ कामतृप्ति के लिए अन्य मार्ग का अवलंब करती है। इसी कारण सामाजिक मूल्य घटते जा रहे है। इसका परिणाम समाज पर दिखाई देता है। रेनु लडकों के सामने जाँघ ऊपर तक खोलकर जाँघ से छुआना, ड्रेस का ट्रायल करने के लिए एक लडके को ब्लाऊज के हुक खोलने के लिए कहना आदि बातें विघटित नैतिक मूल्यों को सूचित करती है।[10] मिसेस मदान तो रेनु से भी अधिक काम विकृति से पेश आती है। वह तो माली को चूमती है, तो कभी उसके शरीर पर हाथ फेरती है। मिसेस रेनु और मिसेस मदान माली को टार्चर करती है उनमें अमानवीयता और

पशुता दिखाई देती है। मिसेस मदान का एक ओर अपने जंगली तेंदुअे के साथ प्यार से पेश आना, उसे किसी प्रकार की तकलीफ न देना तथा उसके मीट न खाने पर दु:खी होना और दूसरी ओर माली के साथ अमानवीय व्यवहार करना विघटित मानवीय मूल्यों को व्यंजित करता है। मिसेस मदान और मिसेस रेनु में खूँखारपन की प्रवृत्ति भी दिखाई देती है – उनके संवाद इसी के द्योतक है –

रेनु हेअर ऑयल की बोतल और कई रंगीन स्कार्फ लेकर आती है ।

मिसेस मदान : मार्बलस। ब्युटीफुल । (स्कार्फ माली को दिखाती है) देखो कितने खूबसूरत है ये स्कार्फ ... सुपर्ब बाटिक प्रिंटस । कितना मजा आएगा .... इस आदमी को जो मशाल बनेगी उससे व्यटिक फ्लेम्स निकलेंगी और उसके धूएँ में रजनी गंधा के फूलों की खुशबू ....

(बोलते हुए माली के माथे के चारों ओर स्कार्फ लपेटती जाती है। कई स्कार्फ से वहाँ पगडी जैसे लगने लगती है।)

मिसेस मदान : गुड । नाऊ लुक । किस कदर रंगीन मशाल है ... गिव मी द बॉटल .. (काडी पर तेल डालती है।)

मिसेस मदान : टेप चला दो .... लेटस हैव द म्यूझिक । (टेप फिर बजना शुरू होता है।)

मिसेस मदान : मेरा लाइटर .... लाइटर मेरे पर्स में होगा ....।[11]

इसी तरह माली को टार्चर कर, वह माली को त्रासित करती है और आनंद प्राप्त करती है। मिसेस मदान और रेनुराय की हर क्रिया बीभत्स है। यहाँ मुद्राराक्षसजी ने अपने इस नाटक के द्वारा, तेंदुआ जैसी बर्बर हुई प्रवृत्ति को दिखाते हुए यह सिध्द करना चाहा है कि आज का सर्वसाधारण व्यक्ति शोषक वर्ग की कामुकता, लिप्सा का शिकार बनता चला जा रहा है।[12]

आपके संवाद अलग प्रकार के रहे हैं। आपने भूमिका में कहा है –

"-नाटक की एक अनिवार्य शर्त संवाद–सम्बोधन भी इसमें नहीं हैं। सम्पूर्ण क्लासिकी और संचभ्रान्ति–निर्भर नाट्य साहित्य की आन्तरिक गति संवाद–सम्बोधन पर आधारित होती है। एक पात्र द्वारा दूसरे पात्र या पात्रों को सम्बोधित संवादों द्वारा नाटकीय प्रतिक्रियाओं को जन्म दिया जाता है चाहे वे नाटकीय प्रतिक्रियाएँ भाषा–मूलक हों या आचरण मूलक । एक संवाद की नाटकीय प्रतिक्रिया दूसरा संवाद भी हो सकता है और कोई एक घटना या क्रिया या आचारण खण्ड भी। आपके संवाद अलग प्रकार के रहे हैं। आपने भूमिका में कहा है –

"तेंदुआ" का गठन मूलतः ऐसे सम्बोधन धर्मी संवादों से रहित है। अधिकांश हिस्सा एकालयों, स्वागतों और सम्मतियों को एक कोलाज है। विशेष रूप से पहला औरतीसरा अंक ।" [13]

प्रस्तुत नाटक के बारे में मुद्राराक्षसजी के विचार वे खडी बोली हिन्दी बोलते है, अवधी, ब्रज, भोजपुरी या कोई दूसरी बोली नहीं। आमतौर पर उन्हें खडी बोली नहीं बोलना चाहिए। लेकिन ध्यान से देखने पर जाहीर हो जायेगा कि वह भाष्य खडी बोली हिन्दी के आन्तरिक स्वभाव से बिल्कुल अलग भाषा संस्कार वाली है। मेरे लिएँ व्याकरण के बजाय किसी भाष्य का संस्कार ही महत्वशाली है। तेंदुआ के पहले और तीसरे अंक में प्रयुक्त खडी बोली का भाष्य संस्कार वही वहीं है जो पुलिस कमिशनर, मिसेस राय अथवा मिसेस मदान का है। भद्र लोक द्वारा प्रयुक्त भाषा में अर्थ सन्तुलन है और अपधारणाओं में संस्कार शुध्दि है। भाषा प्रयोग की चालाकी और उसका कौशल भद्रलोक की भाषा से जाहिर होता है। उन नामहीन नियति पीडित सडकों की भाषा में न चालाकी है न कौशल। उनमे अर्थ सन्तुलन भी नहीं है और संस्कार शुध्दि भी नहीं है। इसलिए मुझे इस बात की जरूरत नहीं महसूस हुई कि वे अवधी भाषा बोले।" [14]

पुलिस कमिशनर राय: किधर, गया वो ? तुम लोगों ने उसे देखा ? किधर गया ?

लडका 2 : तुम लोग सोच समझकर जवाब देना। गर्दन पर हाथ देकर धक्का देना।

लडका 5 : गर्दन पर हाथ क्या टाँग में गोली मार दे तो री–री करते रहोगे। [15]

यह स्थिति नाटकीय परम्परा में थोडी असाधारण है। लेकिन यह सम्बोधनहीनता नाटकीय अनिवार्यता है।

"स्टेनिब्लाण्स्की ने क्लासिकी और पारम्परिक मंचन की अपेक्षा प्राकृतिक यथार्थ पर बल दिया है और चरित्रों की आत्मा से परिचय को उद्‌देश्य माना है। स्टैनिब्लाण्स्की पध्दति जिस चारित्रिक अंतरंग की खोज पर जोर देती है वह काफी प्रभावशाली सिध्द हुई है। इसमें शक नहीं। अभिनय इसी के बाद भाषा बना। अभिनेता मात्र अदाकार न होकर चरित्र का अनुसंधाता बन गया। नाटकीय भ्रांति को इस घटना ने बौध्दिक विषय भी बना दिया। इनका मत यही है केवल अभिनेता मंच पर केवल हावभाव, या डायलॉग बोलने से अभिनय नहीं होता तो जिसका अभिनय करना है वह अभिनय आंतरिक मन से करके वह सफल अभिनय बन सकता है। उनकी भाषा परम्परागत भाषा से भिन्न है, उनकी भाषा मानवीय बोलचाल की भाषा है।"

तेंदुआ की रचना करने की प्रेरणा की घटना का बयान देते हुए मुद्राराक्षसजी ने बताया है –

"तेंदुआ" की रचना के पीछे एक छोटीसी घटना है। घटना का बयान मेरे अभिनेता मित्र कुलभूषध खरबन्दा ने किया।यकिसी नाटक का मंचन समाप्त करने के बाद कुलभूषण खरबन्दा और राजा लौट रहे थे कि रास्ते में गाडी दुर्घटनाग्रस्त हो गई। दोनों ही बुरी तरह घायल हो गए थे। उस आधी रात के वक्त असहाय, घायल,नीम बेहोशी में उन्होंने सुना – कोई एक गाडी उधर से गुजरी, ठिठकी, किसी लडकी ने किसी से पूछा – क्या हुआ ? शायद गाडी में ही किसी दूसरे ने कहा – ऐक्सीडेंट । लडकी की आवाज आई – हाय, वी मिस्ड ए थ्रिल। गाडी आगे बढ गई। नाटक का आधार वह एक छोटा–सा फिकरा ही है।

मनुष्य सौंदर्य पिपासु प्राणी। वह सौंदर्य की ओर सहज ही आकृष्ट होता है। मनुष्य सदैव यह प्रयत्न करताहै कि वह दूसरों से अलग कैसे दिख सके। मनुष्य अपनी सुंदरता को बढाने के लिए विविध प्रकार के आभूषणों को पहनता है। मनुष्य की इन्हीं वृत्तियों ने फैशन को जन्म दिया। आधुनिक युग में हम देखते है कोई व्यक्ति अपनी प्रतिष्ठा के लिए भी फैशन को चुनता है। स्त्रियाँ और युवतियाँ इसी की ओर अधिक आकृष्ट होती है। अलग–अलग प्रकार के कपडे जूते बाजार में आते है, उन्हें खरीदने के लिए लोगों में होड लगती है। बाजार में ऐसे बहुत से अलग–अलग कपडे होते हैं उसे केवल बडे आदमी ही खरीद सकते है। फैशन के क्षेत्र में

ज्यादातर स्त्रियाँ ही आकर्षित होती हैं। स्त्रियाँ फ़ैशन की दुनिया में अधिक फेशनेबल कैसे रह जाय इसी की ओर ज्यादा तर ध्यान दे रही है। वह केवल यह सोचती है कि मैं कैसी सुंदर दिख पाऊंगी, मैं अन्य सुंदर स्त्रियों के मुकाबले मेरी सुंदरता कैसे उभर आएगी। इसके लिऐ वह अनेक तरकिबे ढूँढने का प्रयत्न करती है। इसी फैशन के कारण आज लडकियों में बहुत परिवर्तन आ चुका है, लडकियाँ साडी पहनने के बजाय वह जिन्स पॅन्ट पहनती हैं, इससे समाज में बदलाव आता है। आज क़ॉलेज में भी लडकियाँ इसी फैशन को अपनाती है। किन्तु ऐसी बहुतसी लडकियाँ होती है, जो गरीब और आर्थिक परिस्थितियों के कारण वह अच्छे कपडे खरीद नहीं सकती। कॅालेज का वातावरण ही उसे फेशनेबल कपडे खरीदने पर मजबूर करता है।

मुद्राराक्षस के असंगत नाटकों के अधिकांश पात्र अलग प्रकार के हैं। अतः वे फैशन के संबंध में वे उतने सजग नहीं दिखाई देते जितने सामान्य पात्र। क्रिंतु तेन्दुआ नाटक में स्त्री पात्र है जिनमें फैशन की प्रवृत्ति दिखाई देती है।

तेंदुआ नाटक में रेनु राय उच्च्व वर्ग की सुविधा भोगी नारी है। इसीके पास सभी चीजें हैं, जो सोंदर्य को आकर्षक बनाती है। रंगमंच पर वह जब प्रवेश करती है तब वह अपने बालों में फूल लगाने में व्यस्त है। बम विस्फोट के कारण जब धूल उडती है, तब रेनु रॅाय अपने बालों में पडी धूल को निकालने के लिए वह लडका नं.5 को अपना रूमाल देती है। इस समय उसके बाल बिखर जाते हैं तब अपनी पर्स से ब्रुश और शीशा निकालती है और अपने बालों को ठीक करती है।

प्रस्तुत नाटक में फैशनेबल का प्रयोग कम मात्रा में ही नजर आता है। नाटक के पात्र दो वर्गों में बाँटे गये है – उच्च्व वर्ग और निम्न वर्ग के उच्च्व वर्ग पात्र मिसेस मदान, मिसेस रेनु - राय को आधुनिक फैशनेबल पोशाक और मेकअप आदि के साथ प्रस्तुत किया जा सकता है। माली अर्धनग्न है। और माली की स्त्री सामान्य वेशभूषा में है। पात्रों के बीच सम्बोधनहीनता है जिसे लेखक ने नाटकीय अनिवार्यता मानकर अपनाया है। गरीब लडके, पुलिस कमिशनर, मिसेस

राय, मिसेस मदान एक ही भाषा में बोलते है, किन्तु उनके भाषा में स्वभाव उसका रचाव भिन्न भिन्न है।

डॅा.गिरीश रस्तोगी के अनुसार – "तेन्दुआ कहीं अत्यंन्त हारर और टार्चर वाला नाटक भी लगता है और नये–नये प्रयोगों और कुछ असाधारण ढंग से कहने का नाटक भी लगता है। लेकिन आम शिकायत मुद्राराक्षस के इन नाटकों के बार में यह है कि अपनी सारी कल्पनशीलता, नवीनता के बावजूद कहीं यह अपनी जमीन से जुडते नहीं लगते, और बार–बार कहते हुए भी ये अपने "असाधारणता" के मोह में पश्चिमी जीवन की असम्बध्दता, सूनापन, असम्पृकता, हिंस्त्र भावना और घृणित विकृतियों को दिखाते है।[16]

हमारे जीवन में "अर्थ" महत्वपूर्ण है जो सबसे आवश्यक चीज है। इसके अभाव में मनुष्य को समाज में कोई महत्व नहीं रहता। जीवन रूपी नौका खेने के लिए धन रूपी पतवार की आवश्यकता होती है। समाज में व्यक्ति को तभी बडा स्थान मिलता है जब उसके पास बडा धन, बहुत पैसे हो। मनुष्य अपने जीवन में बहुत धन कमाना चाहता है और अमीर बनना चाहता है। किन्तु जिसके पास पैसा है वह रात भर उसी के बारे में सोचता है, उसे दूसरी तरफ ध्यान देने के लिए फुर्सत तक नहीं होती। वह ठीक से अपने बच्चों की ओर ध्यान तक दे नहीं पाता और नाहीं पत्नी की ओर। केवल पैसा होने से मनुष्य सुखी नहीं होता। फिर भी मनुष्य इसी धन को कैसे भी क्यों न हो उसे जुटाने में व्यस्त है। आज इसके आधार पर (अर्थ के) कैसे दो वर्गों का निर्माण हुआ –(1) निम्न वर्ग, (2) उच्च वर्ग ।

निम्न और उच्च वर्ग बच्चों की वेशभूषा से ही हमें पता चलता है कि बच्चे निम्न वर्ग के है। उच्च वर्ग के लोग निम्न वर्ग के लोगों के साथ अच्छा बर्ताव नहीं करते। भूषणराय और रेनुराय इसी कारण लडकों से संवाद स्थापित नहीं करा सकते। निम्न संवाद इसी की ओर संकेत करते है –

रेनुराय : (विंग की ओर उत्साह से) हाय भूषण तुम आ गये ? मैं तो यहाँ अकेले मर

ही गई हूँ। यू नो .. दीज फूल्स .... इनसे कोई कम्युनिकेशन ही नहीं होती .... तुमने कितनी देर लगाई भूषण ?[17]

प्रस्तुत नाटक में "घास" एक आम जनता का प्रतीक है। नाटक के प्रारंभ में तीन मैले से लडके जूट के बोरे के थैग्ले जैसे पहने हुए आते हैं। उनकी यह वेशभूषा, उनकी गरीबी को उभारती है जो अमीर लोगो की घास पर पैर रखने में डरते है –

लडका 1 : तुम लोग थोडा और उधर खिसक लो .....

लडका 2 : उधर ? देखते नहीं हों उधर कितनी अच्छी घास लगी हैं। कोई पीट देगा।

लडका 1 : इसी जगह खडा होना था न ?

लडका 2 : (तीसरे को पीछे खींचकर) ज्यादा आगे क्यों घुसे जा रहे हो?

लडका 1 : उधर कोठी के पास खडे हो तो कैसा रहे ? वहाँ छाया भी होगी ।

लडका 2 : पागल हुए हो? घास के ऊपर कैसे खडे होंगे? बहुत कीमती होती है। घोडा जिसे खाता है वह नहीं है।

लडका 2 : हो सकता है निकली हो। फूल न भी निकलते हों तो क्या । हो सकता है इसमें रात के वक्त खुशबू आती हो।[18]

गरीबी के कारण लडके घास पर पैर तक रख नहीं पाते। क्यों वे उस घास पर पैर रखने से डरते है। क्योंकि वे गरीब हैं।

माली और रेनु एक ही कॅालेज में होने के कारण माली रेनु को जानता है। वह उससे प्रेम भी करता है। वह कॅालेज के दिनों में उसे रोज एक गुलाब का फूल देता था। किन्तु बडे लोगों के साथ गरीब लोगों का कभी जम नहीं पाता है। गरीब लडकी, अमीर लडके के साथ प्यार करती है तो उसे एक प्रकार का गुनाह माना जाता है। क्योंकि उच्च वर्ग वाला व्यक्ति हमेशा अपने बराबर के लोगों के साथ प्यार करता है। माली गरीब है और रेनु रईस है। माली अपने अंदर की बात होठों पर आने नहीं देता। क्योंकि वह एक गरीब घर का है, और वह एक रईस घर की

होने के कारण वह अपना प्यार भरा लब्ज उसे बताने में कमी महसूस होती है। रेनु के संवादों से स्पष्ट होता है कि वह उसे चाहता भी था और उसके साथ यौंन संबंध स्थापित करने की भी उसकी इच्छा थी पर शायद आर्थिक विपन्नता ही उसे ऐसा करने से रोक देती है। आर्थिक विपन्नताके कारण दोनो स्त्रियाँ माली के साथ अमानवीयता से पेश आती है।

मनुष्य का संबंध समाज से होता है। वह सदैव दूसरों पर अवलंबित होता है। इसी कारण मनुष्य एक दूसरे पर अवलंबित होने के कारण वह परावलंबी बना है। अपना जीवन, अच्छी तरह से बिताने के लिए या परिवार के समस्याओं को निपटाने के लिऐ उसे नौकरी की आवश्यकता होती है, वह जहाँ नौकरी करता है उसे दूसरों के अधिन रहकर काम करना पडता है। वह तो योग्य काम करता है उसे उससे आनंद मिलता है किंतु उसे ऐसे अनेक काम करने पडते है, जो उसे अच्छें नहीं लगते फिर भी नौकरी की परवशता के कारण विवश होकर वे काम करने पडते हैं। यह जिस संस्था, कार्यालय में काम करता है, वहाँ का आधेकारी अपनी इच्छा के अनुसार काम करवाता है, अगर वह काम गलत हो, तो उसे विरोध नहीं किया जाता है। क्योंकि वह अधिकारी है, उसकी इच्छा ही अपनी इच्छा मानकर ही काम करना पडता है। वह नौकरी की पराधीनता व्यक्ति को बुरे मार्ग पर चलने के लिए बाध्य करती है। वह न भ्रष्टाचार के खिलाफ आवाज उठाता है, न ही वह उसे रोक पाने में कामयाब होता है। वह कार्यालय में गलत काम होते देखते हुये भी उसका विरोध नहीं करता है, इसी प्रकार उसे आँखें होते हुए भी वह अंधा बनता है, कान होते हुए भी वह बहरा बनता है, जुबान होते हुए भी वह गूँगा बनता है। यह केवल नौकरी की पराधीनता के कारण होता है। यह परवशता मनुष्य को यंत्रों की तरह संवेदनशून्य बनाती है।

मुद्राराक्षस के तेंदुआ नाटक में भूषणराय और रेनु राय के आज्ञानुसार लडकों का कार्य करना, संतरी के बुलाने पर अन्दर जाकर माली की लाश उठाकर लाना, जब माली मर जाता है तब माली की लाश को किसी डॉक्टर को सौंप देने के दानपत्र पर माली की स्त्री का अंगूठा लेना। तीन–तीन के लाईन में खडे होकर उनका रिहर्सल करना यान्त्रिकता की ओर संकेत करता

है। रेनु राय और मिसेस मदान जब माली को अनेक यातनाएँ देती है, उसे मारती है, उसकी उंगली को चबाती है, उसे असहाय्य कर देती है लेकिन माली इसका विरोध नहीं करता। वह आखिर मर जाता है। उसी लाश को देखकर माली की पत्नी मौन विलाप करती है, यह मौनविलाप भी यांत्रिकता का ही परिचायक है। उच्चवर्ग के पात्रों में परवशता और यांत्रिकता दिखाई देती है। भूषणराय पुलिस कमिशनर है जो नपुंसक और पत्नी के हाथ में है। वह अपनी पत्नी की कामवासना तृप्त नहीं कर पाता है, वह आतंकवादी को पकडने में कामयाब नहीं होता तो वह किसी एक निरीह माली को पकडकर लाता है, किन्तु पत्नी की इच्छा की खातिर ही उसे पुलिस लौक अप में बंद करने के बजाय वह अपनी पत्नी को सोंप देता है। उसे नौकरी की परवशता इच्छानुसार कार्य करने में बाधा बनती है। वह जब अपनी पत्नी के साथ क्लब जाना चाहता है तो उसे एक महत्वपूर्ण मिटींग का इन्तजाम करना पडता है।

प्रधान मंत्री का भाषण तो किसी की समझ में नहीं आता है। नेता और जनता का संबंध प्राचीन काल से आ रहा है। प्राचीन काल में नेता राजा को माना जाता था। क्योंकि वह जनता की सुखदु:ख में शामिल होते थे, वह जनता के सुख के लिए दु:ख के लिए अपना ऐश्वर्य अपना आनंद भुला देते थे। किंतु आज आधुनिक युग में जनता और नेता का संबंध केवल वोटों के लिए होता है। वह जब नेता बनता है तो केवल वह जनता को आश्वासनों के अलावा कुछ नहीं देता। राजनीतिक नेता के प्रति जनता विश्वास रखती है। क्योंकि हम ही उन्हें अपना नेतृत्व करने के लिए वहाँ भेजते है, ताकि वह अपनी समस्या, अपने राष्ट्र की समस्या हल करें। किन्तु आज के नेतागण जनता के भोलेपन का नाजायज फायदा उठाकर अपना हित कर रहे है, अपनी समस्याओं को हल करने में जूटे हैं। समाज की ओर ध्यान देने के लिए उनके पास वक्त नहीं है, वे ऊपर से सफेद कपडे पहनकर यह साबित करना चाहता है कि वे गंगा जैसे निर्मल है। किन्तु इन्हीं कपडों के अंदर स्वार्थ, काली करतूतें छिपी है। जो सत्ता को खोखला कर रही है। भ्रष्ट राजनीति को बढावा देने वाला आज का नेता समाज का शोषण कर रहा है, अपने धन के बल पर, वह विधायक बन जाता है। उसे किसी प्रकार का ज्ञान नहीं होता। जिसके पास ज्ञान नहीं वह नेता अपने देश का अपने समाज की समस्या कैसे हल करेगा। पुलिस कमिशनर अपनी

पत्नी के साथ क्लब जाना चाहता है, प्रधान मंत्री के भाषण की व्यवस्था के कारण वह नहीं जा सकता। वह अपनी पत्नी से कहता है – "अब कैसे जा सकता हूँ ? वक्त तो इन्हीं लोगों का पीछा करते करते निकल गया अब मुझे मिटिंग का इन्तजाम देखना है। कल प्रधानमंत्री की स्पीच होगी। मामूली सरदर्द नहीं है।

प्रधान मंत्री जब भाषण करते हैं तो वे ऐसी भाषा में बोलते जो जनता की समझ में नहीं आती, जनता उसी भाषण को सुनने के लिऐ जा रही है। माली की पत्नी मौन विलाप कर रही हैं। किन्तु जनता माली के दु:ख में भाग लेने के बजाय, वे प्रधानमंत्री का भाषण सुनना अधिक महत्वपूर्ण मानते है। माली की स्त्री अपने पति की मृत्यू के कारण वह मौन विलाप कर रही है और जनता मंत्री का भाषण सुनने के लिए जाती है –

लडका 4 : अजीब मुश्किल है। उधर तो भाषण चल रहा है और यहाँ इसने रोना धोना शुरू किया ।[19]

आज माहौल में यही भाव है।

इससे यह स्पष्ट होता है कि प्रधान मंत्री के भाषण के माध्यम से आज के नेताओं को भाषण की निरर्थकता और यांत्रिकता को प्रस्तुत करते हैं। और वर्तमान राजनीति की भ्रष्ट स्थिति पर भी प्रकाश डालते है।

नाटक के आरम्भ में तीनों लडके हाथ जोडकर आँख बंद करके प्रार्थना के लिऐं तैयार रहते हैं और वे यह गीत गाते हैं –

"उठ जाग मुसाफिर भोर भई अब रैन कहां जो सोवत है"[20]

लडकों के ये गीत, यांत्रिकता के ही परिचायक है।

और तीन लडके आते हैं और कहते हैं अरे ये क्या हो रहा है? ये लडके पोर्च के दोनो तरफ एक लाईन में खडे हो जाता है और गीत गाते है –

छापक पेड खिडकिया त पतनवन गहवर हे

तेहि तर ठाढि हिरनिया हो रामा ...

तेहि तर ठाढि हिरनिया हरिनि का बिसूरई हे

छापक पेड खिडलिया त पतवन गहबर हे

तेहि तर ठाढि हिरनिया हरिन का बिसूराई हे रामा ...[21]

यह रिहर्सल का लोकगीत भी यांत्रिकता से परिचालित है। डॉ.राजश्री शुक्ला –"यांत्रिकी ने आज के मनुष्य को संत्रास बना दिया है। वह हर क्षण भय की अनुभूति करता है। यह भय और संत्रास उसके जीवन का अंग बन गया है।"[22]

मनुष्य समाजशील प्राणी है। आज का युग वैज्ञानिक युग है। मनुष्य सदैवी अपनी बुध्दि से काम लेता है, और अपना सारा जीवन सुख–शांति की खोज में लगा देता है। वैज्ञानिक युग के कारण मनुष्य के रहन–सहन, खान–पान में भी परिवर्तन आया है। जिसके कारण मनुष्य अत्यंत व्यस्त और निश्चिंत बन गया है। यह एक प्रकार से वरदान साबित हो सकता है फिर भी दूसरी ओर से देखा जाय तो वह विज्ञान मनुष्य के जीवन को नष्ट करने पर तुला है। जिस विज्ञान ने मनुष्य के लिए सुख शांति उपलब्ध की, आज वही विज्ञान सबको नष्ट करने पर उतर चुका है। हिरोशिमा औगर नागासाकी जैसे जपान के शहरों पर बम विस्फोट करके सारा जीवन ध्वस्त हुआ था। यह आतंक काउदाहरण है। आज हम देखते हैं चारों ओर तहलका मचा हुआ है। केवल भारत में ही नहीं बल्कि सारे विश्व में आतंक का बोलबाला है। मनुष्य अपना जीवन खुशी से जीना चाहता है लेकिन आज व्यक्ति इस आतंक के परिवेश में घबडाकर जीवन व्यतीत कर रहा है। आज लोगों को विश्वास नहीं, मृत्यू कब आयेगी? इसी आतंक ने जनता का जीवन उध्वस्त कर दिया है। घर से निकला हुआ व्यक्ति जब तक घर वापस लौट नहीं पाता, तब तक वह अपना नहीं होता। इससे यह स्पष्ट होता है कि व्यक्ति डरा हुआ है। तेंदुआ नाटक का आरम्भ भी इसी आतंकवाद से होता है, भूषणराय पुलिस कमिशनर है, वह आतंकवाद का पीछा कर रहा है। पुलिस कमिशनर और नेपथ्य से सुनाई देने वाली आवाज आतंक और डर का वातावरण निर्माण करती है ।

(नेपथ्य में किसी बम विस्फोट की आवाज होती है। पुलिस की सीटियाँ सुन पडती है। एक लडका विंग से निकलकर स्टेज पार करके दौडता हुआ दूसरी विंग में गायब हो जाता है।)

लडका 1 : हाँ ... छठ्ठी थी, छठ्ठी ... राजा दशरथ के बेटे की छठ्ठी थी...

लडका 3 : कल राजा दशरथ के बेटे की छठ्ठी थी.. इसलिए मेरे हरिन को ....

(ठीक इसी क्षण पुलिस कमिशनर भूषण राय हडबडाया हुआ आता है।)

भूषणराय : किधर गया वो? तुम लोगों ने देखा उसे ? किधर गया?

लडका 2 : तुम लोग सोच समझकर जवाब देना। गर्दन पर हाथ देकर धक्का देगा।

लडका 5 : गर्दन पर हाथ क्या। टाँग में गोली मार दे तो रीं री करते रहोगे।

लडका 4 : हम लोग अपनी रिहार्सल करें ?

लडका 4 : रिहर्सल ? अब देख रहे हो। हाकिम खडा है।[23]

विंग में दुबारा बम का विस्फोट। इस बार आग चमकती है और मिटटी रॉय और रेनु पर गिरती है।

भूषण राय : (रेनु को धकेलते हुए) रेनु फौरन अन्दर आओ ... गार्ड गार्ड भागने मत देना .... शूट .... गोली मार दो।

रेनु राय : नो । गार्ड खबरदार । राय आय वाण्ट हिम ए लाइव। राय तुम मेरे लिए यह भी नहीं कर सकते।[24]

उपर्युक्त विवेचन से यह स्पष्ट होता है, जिस विज्ञान ने व्यक्ति को आनंदी बनाया वहीं विज्ञान व्यक्ति को, मनुष्य को समाप्त भी कर सकता है। आतंक के कारण माहौल में एक प्रकार का सन्नाटा और भयावह दृश्य उत्पन्न हो सकता है, जो समाज को समाप्त भी कर सकता है। जो मानवता के आँगन में दानवता का दृश्य उपस्थित कर सकता है।

पुलिस तो समाज के रक्षक होते हैं। पुलिस व्यवस्था का समाज में शांति और सुरक्षा बनाये रखना उनका काम होता है। लोगों की रक्षा करना उनका धर्म है। और वही अपराधियों को पकडकर उन्हें शासन करना उनका ही काम है। किंतु आज वर्तमान पुलिस व्यवस्था व समाज

का रक्षण करती है और न ही सही अपराधियों को पकडकर शासन करती है। बल्कि निरीह निरापराध लोगों को पकडकर उन्हें शासन करती है।

"तेन्दुआ" नाटक में भूषणराय एक पुलिस कमिशनर है, जो किसी आतंक वादी का पीछा करता है किन्तु उसे पकडने में कामयाब नहीं होता तो वह किसी निरीह गरीब निरापराध माली को पकडकर लाता है। इसी माली को लौक में बंद करने के बजाय अपनी पत्नी को कामतृप्ति की इच्छा पूर्ण करने के लिए उसे सौपता है। उनका यह कार्य वर्तमान पुलिस व्यवस्था की मानमानी कार्यपध्दति पर प्रकाश डालता है।

प्राचीन काल में लोग दान देते थे। वे अपनी मर्जी से देते थे। इससे उनको आनंद मिलता था। उनके पीछे किसी प्रकार का स्वार्थ नहीं था। आधुनिक युग में जब मनुष्य दान करता है तब उसके पिछे कोई न कोई स्वार्थ छिपा हुआ रहता है। जब हम मंदिर में जाते हैं तब एक बोर्ड लगा रहता है और उस पर जिन्होंने कितना-कितना दान दिया उसीका ब्यौरा रहता हे। इसका एक ही अर्थ निकलता है कि ये लोग बहुत बडे आदमी है, और अपना नाम किसी तरह बडा हो जाय इसी कारण देते हैं। पहले दान तो अपनी मर्जी से देते, अपनी इच्छा से देते। किंतु आज दान तो जबरदस्ती से लिया जाता है। माली को एक आतंकवादी के रूप में भूषणराय जब पकडता है, तो वह उसी को अपनी पत्नी को सौंप देता है। रेनु राय उस माली को टार्चर करती है, उसे अनेक प्रकार की यातनाएँ देती है, कभी उसके कान पर मायक्रोफोन लगाती है, तो कभी उसकी उँगली चबाती है। इन्हीं यातनाओं का सामना करते करते माली मर जाता है। किंतु उच्चवर्ग के सुविधाभोगी लोग माली की लाश एक डॉक्टर को सौंप देते हैं। माली की मृत्यू पर उसकी पत्नी रो रही है, उसकी ओर किसी का ध्यान नहीं है। इसी अवस्था में उसकी पत्नी का अंगूठा जबरदस्ती से दानपत्र पर लगाते हैं और माली की लाश गोरे डाक्टर को दान दी जाती है। इसी प्रकार मुद्राराक्षसजी ने "तेन्दुआ" नाटक में दान वृत्ति पर करारा व्यंग्य किया है।

मुद्राराक्षस के नाटक संबंधी आक्षेप लेते हुए नेमिचंद्र जैन कहते हैं – "वह इस हद तक ठेडी है कि शहरी हो जाती है, और स्थितियों अथवा चरित्रों के निजी, भीतरी अन्तविरोध और उनकी मानवीय उपमा गायब होने की हालत पैदा हो जाती है। इसका एक नतीजा यह भी है कि उनके नाटक गठन में भी कुछ बनावटी या बेजान से लग उठते है।"[25]

प्रस्तुत नाटक में मुद्राराक्षसजी ने "तेन्दुआ" का प्रतीक के रूपमें प्रयोग किया है। उन्होंने अपने विचारों और मानवीय प्रवृत्ति को अभिव्यक्त करने के लिए उन्होंने पशु प्रतीकों का प्रयोग किया है। यहाँ नाटक के पात्रों में भी प्रतीकात्मकता दिखाई देती है। प्रस्तुत नाटक का पुलिस कमिशनर भूषणराय भी भ्रष्ट पुलिस व्यवस्था का प्रतीक माना जाता है। नाटककार इस नाटक में "घास" का प्रयोग किया है, यह "घास" सामान्य जनता का प्रतीक है। वेशभूषा की दृष्टि से देखा जाय तो, प्रारम्भ में तीन लडके जूट के बोरे के थैले पहने हुए आते, यह उनका पोशाख, या वस्त्र गरीबी की ओर संकेत करता है, यह उनकी गरीबी का ही प्रतीक है। प्रस्तुत नाटक में मुद्राराक्षसजी ने पुराने मिथकों को छोडकर उनका नया प्रयोग करके अपने नाटक में इनका प्रयोग किया है। पुराने मिथक के अनुसार राजा दशरथ के बेटे राम की छठी के प्रसंग में हीरन को मारकर उसके माँस की दावत मेहमानों को खिलादी जाती है और हीरन के खाल की खँझडी बनाकर वह राम को खेलने के लिये दी जाता है। इससे दु:खी हुई हीरनी ढाक के पेड के नीचे खडी होकर मौन विलाप करती है। यहाँ रेनु राय और मिसेस मदान निरीह माली को अनेक प्रकार की यातनाएँ देती है उसे टार्चर करती है। उन्हीं यातनाओं को वह सहता है किंतु विरोध नहीं करता। चुपचाप सहते सहते आखिर में उसी की मौत हो जाती है। उसकी लाश गोरे डॉक्टर को दानरूप में दी जाती है। उस बंगले के बाहर यह माली की पत्नी रोती है। इसी को मुद्राराक्षसजी ने नये संदर्भ में प्रयोग किया है, यहाँ माली हीरन का प्रतीक है और स्त्री हिरनी का। यही हीरनी हीरन के मृत्यू के कारण हताश है।

डॉ. सत्यव्रती त्रिपाठी के अनुसार – वस्तुत: शोषणकारी या दमनकारी शक्तियों के तंत्र को उजागर करने के लिए यौन प्रतीकों का उपयोग हिंदी नाट्य साहित्य में मुद्राराक्षस ने ही अपने

निराले ढंग से किया है और इस दिशा में यह नाटक एक उल्लेख्य प्रयोग है।[26]

मुद्राराक्षस का तेन्दुआ नाटक पशुप्रतीक नाटक है। जो एक अलग ढंग का है। इस नाटक में मुद्राराक्षसजी ने माली को तेंदुआ का नाटक माना है। इसमें भय, आतंक, जंगलीपन का अनुभव होता इसमें न घटनायें है, न पात्रों की चरित्रगत विशेषतायें। इस नाटक में "तेंदुआ" को माली का प्रतीक माना है। किंतु कुछ विद्वान आलोचकों में मतभेद है, अनेक आलोचको के विचार निम्नलिखित है –

डॅा. सुंदरलाल कथूरिया के अनुसार – तेंदुआ निरीह माली का प्रतीक न होकर इस नाटक में आई हिंस्त्र नारियों का प्रतीक है।[27]

डॅा. शेखर शर्मा भी तेन्दुआ को माली का प्रतीक मानने के बदले अफसरशाही और फीतशाही को उसके असली रूप में उद्घाटित करने का प्रतीक मानते है।[28]

डॅा. दशरथ ओझा के अनुसार तेंदुआ मानव के पाशविक संस्कार समूह का प्रतीक है।[29]

डॅा. सत्यव्रती त्रिपाठी के अनुसार तेंदुआ उच्चवर्ग के पाशविक संस्कारों और नैतिक स्सखलन का प्रतीक ।[30]

प्रस्तुत नाटक में तेंदुआ माली और नाटक में आयी हिंस्त्र महिलाएँ दोनों का प्रतीक बन जाता है। जैसे कि किसी पशु को अगर बाँधकर रख दिया जाता है, और उसे अगर मार दिया जाता है तो वह किसी प्रकार का विरोध नहीं करता है, वह केवल ऑखें मूँदता है। इसी प्रकार मिसेस मदान और रेनुराय माली को यातना देती हैं, वह भी पशु की तरह उनका विरोध नहीं करता है, केवल वह यातनाएँ सहता है।

दूसरी ओर से देखा जाय तो तेंदुआ में जो सुंदरता और आकर्षण है वहीं आकर्षण इन दोनों स्त्रियों में देखा जाता है। साथ ही साथ उनमें तेंदुआ जैसी क्रूरता, हिंस्त्रता और बर्बरता देखी जाती है।

उपर्युक्त विवेचन से यह कहा जा सकता है कि मनुष्य पशु जैसा बनता जा रहा है। पशु में जो गुण, हिंस्त्र, बर्बरता है। वही मनुष्य में अधिक दिखाई देती है। उस में पशुत्व नजर आता। मुद्राराक्षसजी ने "तेंदुआ" नाटक के द्वारा यही स्पष्ट करने का प्रयत्न किया है,और मनुष्य के अंदर छिपे पशुपन को उजागर किया है। मुद्राराक्षसजी ने अपने नाटकों में अफसरशाही, एवं लाल फीतशाही व्दारा किए जाने वाले काले कारनामों का पर्दाफाश बडी सफाई से किया गया है, साथ ही साथ इनकी अजीबों गरीब आदतों एवं आम जनता के साथ इनके व्यवहारों को बडी कुशलता के साथ चित्रित किया है। संघर्षशील जनता की बेबसी दयनीता एवं त्रासद स्थितियों को धार्मिक अभिव्यक्ति देते हुए नाटककार ने उस ट्रेजेडी की ओर ध्यान आकर्षित करना चाहा है। जहाँ सामान्य जन की पीडादायक, मरणासन्न स्थिति को लोगों के मनोरंजन का साधन बनकर रह जाया करती है।

यह वैचारिक नाटक मंचन की दृष्टि से एक अत्यंत विचारोत्तेजक, सशक्त और अभिनेय नाटक है।

नाटक के क्षेत्र में काम करने वाली रचनात्मक प्रतिभाएँ अधिक नहीं है। एक सक्रिय द्वन्द्वोन्मुख संवेदना अपने को जिस विधा के माध्यम से सर्वाधिक व्यक्त करत सकती है उस विधा के रूप में नाटक को या तो बहुत पहले के साहित्यिक अतीत में स्वीकृति दीगयी थी या अब दी जा रही है। मुद्राराक्षस ने पिछले दिनों नाट्य सृजन के क्षेत्र में न सिर्फ दिलचस्पी दिखायी है, बल्कि एक महत्वपूर्ण युवा नाटककार के रूप में वे स्वीकृत भी हुए हैं। पूरा नाटक सक्रिय उत्तेजना से भरा रहता है। अतिरंजना भी अप्रासंगिक नहीं है। अति साहसिकता के लिए ही नहीं सार्थक प्रयोग के लिए इस नाटक की चर्चा नए नाटकों की कुछ महत्वपूर्ण उपलब्धियों में की जाएगी। सब मिलाकर "तेंदुआ" आज के सामाजिक ढाँचे, अमानवीय प्रशासन, यांत्रिक अभिजात्य और आम आदमी के दुरूपयोग या शोषण के जटिल सम्बन्धों को उजागर करता है।

संदर्भ :–

1. मुद्राराक्षस – "तेंदुआ" (स्वागत) प्र.सं.1975, पृ.23
2. डॉ.सत्यवती त्रिपाठी – आधुनिक हिंदी नाटकों में प्रयोगधर्मिता, प्र.सं.1991, पृ.129
3. डॉ.जयश्री शुक्ला – साठोत्तरी हिंदी नाटकों की सामाजिक चेतना, प्र.सं.1994,पृ.43
4. मुद्राराक्षस – तेंदुआ, प्र.सं.1975, पृष्ठ 58–59
5. जयबंत रघुनाथराव जाधव – मुद्राराक्षस के असंगत नाटक एक अनुशीलन, प्र.सं.1995, पृ.75
6. मुद्राराक्षस – तेंदुआ , प्र.सं.1975, पृ.46
7. वही, पृ.12
8. वहो, पृ.16–17
9. डॉ.टी.आर.पाटील – समसामायिक हिंदी नाटकों में खंडित व्यक्तित्व, अंकन, प्र.सं.1996, पृ.144
10. जयबंत रघुनाथराव जाधव – मुद्राराक्षस के असंगत नाटक एक अनुशील, प्र.सं.1995 पृ.80
11. मुद्राराक्षस – तेंदुआ, प्र.सं.1975, पृ.71–72
12. डॉ.दशरथ ओझा – आज का हिंदी नाटक प्रगति और प्रभाव, प्र.सं.1984, पृ.105
13. मुद्राराक्षस – तेंदुआ (स्वागत) प्र.सं.1975, पृ.16–17
14. वही ,पृ.18
15. वही, पृ.32
16. डॉ.गिरीश रस्तोगी – समकालीन हिंदी नाटकों की संघर्ष चेतना, प्र.सं.1990, पृ.71
17. मुद्राराक्षस – तेंदुआ, प्र.सं.1975, पृ.42
18. वही, पृ.29
19. वही, पृ.87
20. वही, पृ.30

21. वही, पृ.33

22. जयश्री शुक्ला – साठोत्तरी हिन्दी नाटकों की सामाजिक चेतना, प्र.सं.1994, पृ.187

23. मुद्राराक्षस – तेंदुआ, प्र.सं.1975, पृ.32

24. वही, पृ.34

25. डॉ.गिरीश रस्तोगी – समकालीन हिंदी नाटकों की संघर्ष्ज्ञ चेतना, प्र.सं.1990, पृ.72

26. डॉ.सत्यवती त्रिपाठी – आधुनिक हिंदी नाटकों में प्रयोगधर्मिता, प्र.सं.1991, पृ.129

27. डॉ.सुंदरलाल कथूरिया – समसामायिक हिंदी नाटक के बहुआयामी व्यक्तित्व, प्र.सं. 1979, पृ.101

28. डॉ.शेखर शर्मा – समकालिन संवेदना और हिंदी नाटक, प्र.सं.1988, पृ.240

29. डॉ.दशरथ ओझा – आज का हिंदी नाटक प्रगति और प्रभाव, प्र.सं.1984, पृ.104

30. डॉ.सत्यवती त्रिपाठी – आधुनिक हिंदी नाटकों में प्रयोगधर्मिता, प्र.सं.1991, पृ.129